He – चौकस सेवकों का दृष्टान्त लूका १२:३५-४८ | 1

– Save This Page as a PDF–

चौकस सेवकों का दृष्टान्त

लूका १२:३५-४८

खुदाई: इस अनुच्छेद की निगरानी और लूका १२:२२-३४ की चिंता के बीच क्या संबंध है? इन परिच्छेदों की प्रमुख चिंताएँ क्या हैं? पतरस पद ४१ में प्रश्न क्यों पूछता है? येशु वैसा ही उत्तर क्यों देता है जैसा वह देता है? पद ३९-४० में मसीह यह क्यों कहते हैं कि उन्हें तैयार रहना चाहिए? चोर कौन है? पद ४२-४३ में वफादार और बुद्धिमान प्रबंधक का रवैया और कार्य क्या होना चाहिए? पद ४५ में प्रबंधक को गलत काम करने के लिए क्या प्रलोभित कर सकता है? पद ४८ में प्रभु स्वयं इस परिच्छेद का सारांश कैसे देते हैं? प्रेरितों ने इसकी व्याख्या कैसे की होगी?

चिंतन: इन छंदों में यीशु आपको किन खतरों के बारे में चेतावनी दे रहे हैं? कौन सा खतरा आपके लिए समस्या बनने की सबसे अधिक संभावना है? ईश्वर ने आपको अपने प्रबंधक के रूप में क्या सौंपा है? यदि आप जानते थे कि ३० दिन के समय में प्रभु लौट रहे हैं, तो आप चीजों को निरीक्षण के लिए तैयार करने के लिए क्या करेंगे?

इस खंड में मसीहा ने अपने प्रेरितों के आंतरिक समूह को दो दृष्टांत (पद ३५-४० और ४२-४८) सुनाए, जो पतरस के एक प्रश्न (पद ४१) से जुड़े हुए थे। दूसरा दृष्टांत पहले का विस्तार और व्याख्या करता है। यद्यपि एक अर्थ यह है कि ये दृष्टांत मृत्यु के संबंध में काफी लागू होते हैं, लूका के मुख्य बिंदु में दूसरा आगमन शामिल है। यह आधी रात में आने वाले चोर की प्रसिद्ध छवि के उपयोग से स्पष्ट है। अपनी मृत्यु से एक दिन पहले, येशुआ ने बारहों की निगरानी के मुद्दे पर फिर से जोर दिया (देखें Jv – वफादार और दुष्ट सेवकों का दृष्टांत)।

सतर्क सेवकों के दृष्टांत का एक मुख्य बिंदु यह है कि हमें प्रभु की वापसी के लिए निरंतर निगरानी और तत्परता की स्थिति में रहने की आवश्यकता है।

सतर्कता में निर्देश: प्रभु ने अब अपने प्रेरितों को सतर्क रहने का उपदेश दिया। उसने उनकी तुलना अपने गुरु की सेवा करने वाले नौकरों से की। उन्हें किसी भी समय सेवा के लिए तैयार रहना था। इस प्रकार यीशु ने उन्हें कपड़े पहनने और अपने दीपक जलाने के लिए प्रोत्साहित किया। सेवा के लिए तैयार रहें, वस्तुतः खड़े रहें, आपकी कमर पर बेल्ट बंधी हुई है। एक आदमी की यह छवि जिसने दौड़ने के लिए अपने लंबे लबादे को अपनी बेल्ट के नीचे छिपा लिया है, बाइबल में अक्सर पाया जाता है। सही कृदंत का उपयोग, अपनी कमर पर पट्टी बांधकर, किसी ऐसे व्यक्ति को चित्रित करता है,

He – चौकस सेवकों का दृष्टान्त लूका १२:३५-४८ | 2

जो अंतिम क्षण तक इंतजार करने के बजाय, हमेशा कार्य करने के लिए तैयार रहता है। और अपने दीपक जलाए रखें (लूका १२:३५)।

उन पर यह प्रभाव डालने के लिए, उन्होंने एक शादी की दावत की कल्पना का इस्तेमाल किया। शादी की दावत का समय निर्धारित नहीं था। यह कब शुरू होगा, कोई नहीं जानता था। इसलिए मास्टर की वापसी का समय अनिश्चित होगा। तब, यह तस्वीर नौकरों की थी जो अपने मालिक (ग्रीक: किरियोस) के शादी की दावत से लौटने का इंतज़ार कर रहे थे। यह शादी की दावत मेमने की शादी की दावत नहीं है (प्रकाशितवाक्य Fg पर मेरी टिप्पणी देखें – धन्य हैं वे जो मेमने की शादी की दावत में आमंत्रित हैं), क्योंकि यहां दावत के बाद मालिक अपने नौकरों के पास लौटता है।

जब वह वापस लौटे तो उन्हें उम्मीद थी कि वे उनकी सेवा करने
के लिए तैयार होंगे। ताकि जब वह आकर खटखटाए तो वे तुरन्त उसके लिये दरवाज़ा खोल सकें। यदि वे नौकर अपनी जिम्मेदारियों के प्रति उदासीन होते, तो वे अपने दीपक बुझा देते और सो जाते। परन्तु यह उन सेवकों के लिए अच्छा, सचमुच धन्य होगा, जिनका गुरु आकर उन्हें जागते हुए पाए। मैं तुम से सच कहता हूं, वस्तुतः आमीन, वह सेवा करने के लिए स्वयं तैयार होगा, ऊपर मेमने की शादी की दावत का जिक्र करते हुए, उन्हें मेज पर बैठाएगा, और आकर उनकी प्रतीक्षा करेगा (लूका १२:३६-३७)। जिस रात उसके साथ विश्वासघात किया गया, येशुआ ने अपने शिष्यों के पैर धोए (देखें Kh – यीशु ने अपने शिष्यों के पैर धोए)। क्योंकि यह एक दृष्टान्त है, विवरण को दबाया नहीं जा सकता। इसलिए यहां लूका प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करते हुए कहता है कि जो लोग यीशु के लौटने पर वफादार पाए जाएंगे उन्हें सम्मानित किया जाएगा।

यरूशलेम के मन्दिर में रात्रि पहरेदारों को द्वारों और आँगन के चारों ओर चौबीस स्थानों पर नियुक्त किया गया था। उनमें से इक्कीस पर अकेले लेवियों का कब्ज़ा था; अन्य अंतरतम तीन याजकों और लेवियों द्वारा संयुक्त रूप से (कुछ द्वारों पर निगरानी एक समय में कुछ परिवारों के लिए वंशानुगत रही होगी)। प्रत्येक गार्ड में

He – चौकस सेवकों का दृष्टान्त लूका १२:३५-४८ | 3

दस आदमी शामिल थे; इस प्रकार सब मिलाकर दो सौ चालीस लेवी और तीस याजक प्रति रात को काम पर लगे रहे। मंदिर के रक्षकों को दिन में अधिक बार राहत मिलती थी, लेकिन रात में नहीं। इसलिए, जब येशुआ ने कहा: चाहे वह दूसरी घड़ी में आए, चाहे तीसरी घड़ी में, और उन्हें जागते हुए पाए, वह तैयार लोगों को इनाम देगा (लूका १२:३८ एनएएसबी), वह विशेष रूप से दूसरी और तीसरी घड़ी का जिक्र कर रहा था गहरी नींद वाले।

मसीह ने तब सतर्कता का दूसरा उदाहरण दिया। लेकिन यह समझो: यदि घर के मालिक को पता होता कि चोर किस समय आ रहा है, तो वह अपने घर में सेंध नहीं लगने देता, वस्तुतः खोदने नहीं देता। यह एक मिट्टी की ईंट वाले फ़िलिस्तीनी घर का सुझाव देता है। दूसरे आगमन के लिए प्रारंभिक चर्च में चोर का आना एक आम छवि थी (पहला थिस्सलुनीकियों ५:२-४; दूसरा पतरस ३:१०; प्रकाशितवाक्य ३:३ और १६:१५)। तब प्रभु ने अपनी शिक्षा लागू की: तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम उसकी बाट जोहते भी न हो, मनुष्य का पुत्र आ जाएगा (लूका १२:३९-४०)। यह शिक्षा इस तथ्य पर आधारित थी कि इज़राइल द्वारा प्रस्तावित राज्य को अस्वीकार कर दिया गया था। इस प्रकार, इसे भविष्य के समय तक के लिए स्थगित करना पड़ा। यीशु के सेवक यह देखते हुए, प्रतीक्षा करते हुए और तैयार पाए जाएंगे कि यहूदा के गोत्र (प्रकाशितवाक्य ५:५) का शेर फिर से वापस आएगा।

विश्वासयोग्यता में निर्देश: येशु ने पतरस के प्रश्न का सीधे उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय ये छंद संकेत करते हैं कि वह मुख्य रूप से अपने समय के फरीसी यहूदी धर्म के बारे में बात कर रहे थे। धार्मिक नेताओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे परमेश्वर के लिए राष्ट्र का प्रबंधन तब तक करते रहें जब तक कि वह मसीहा साम्राज्य नहीं ला देते। प्रभु ने उत्तर दिया: तो फिर वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान प्रबंधक कौन है, जिसे गुरु अपने सेवकों को उचित समय पर भोजन भत्ता देने के लिए नियुक्त करता है? यह उस नौकर के लिए अच्छा होगा जिसे गुरु लौटने पर ऐसा करते हुए पाए। मैं तुम से सच कहता हूं, वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराएगा। परन्तु यदि कोई दास अपने मन में कहे, कि मेरे गुरु को आने में बड़ी देर हो रही है, और वह अन्य दासों को, क्या पुरूष, क्या स्त्री, सब को पीटना, और खाना-पीना, और पियक्कड़ होना आरम्भ कर दे। (लूका १२:४२-४५))।

हालाँकि, वे अपने कार्य में विफल रहे। वे राज्य की ओर उम्मीद से नहीं देख रहे थे। उस नौकर का गुरु ऐसे दिन आएगा जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा और ऐसे समय आएगा जिसे वह नहीं जानता होगा। सज़ा की डिग्री प्रत्येक व्यक्ति को दिए गए विशेषाधिकारों और उसे बताए गए ज्ञान के आधार पर निर्धारित की जाएगी। इस दृष्टांत में जो व्यक्ति गुरु की इच्छा को जानता था और गुरु की वापसी के स्थगन के कारण अविश्वासी था, उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा, वस्तुतः दो टुकड़ों में काट दिया जाएगा, और अविश्वासियों के साथ जगह दी जाएगी। यिर्मयाह ३४:१८ में यह उन लोगों के लिए सज़ा थी जिन्होंने अपने इब्रानी दासों के साथ दुर्व्यवहार करके

He – चौकस सेवकों का दृष्टान्त लूका १२:३५-४८ | 4

यहोवा के साथ वाचा तोड़ दी थी। जो सेवक गुरु की इच्छा जानता है और तैयार नहीं होता या जो गुरु चाहता है वह नहीं करता, वह बहुत मार खाएगा (लूका १२:४६-४७)। चूँकि यह सबसे कठोर दंड था, मसीह उन विश्वासियों के बारे में नहीं बोल रहे होंगे जो तैयार नहीं थे। वह देश के उन नेताओं का जिक्र कर रहे हैं जो ग्रेट व्हाइट थ्रोन जजमेंट में उपस्थित होंगे (प्रकाशितवाक्य Fo – महान श्वेत सिंहासन निर्णय पर मेरी टिप्पणी देखें)।

परन्तु जो दण्ड के योग्य काम नहीं जानता और करता है, वह थोड़े से प्रहार से पीटा जाएगा। हर उस व्यक्ति से जिसे बहुत कुछ दिया गया है, बहुत कुछ मांगा जाएगा। विशेषाधिकार जिम्मेदारी लाता है और जिसे बहुत कुछ सौंपा गया है, उससे और भी बहुत कुछ माँगा जाएगा (लूका १२:४८)। किसी के पास प्रकाश या ज्ञान की डिग्री, जिम्मेदारी की माप निर्धारित करती है और, परिणामस्वरूप, इनाम या सजा की डिग्री निर्धारित करती है।

शादी की दावत से अपने मालिक की वापसी की प्रत्याशा में, नौकरों ने उचित पोशाक पहनी थी, भोजन तैयार किया था, घर की सफाई की थी, दीपक जलाए थे ताकि वह आसानी से घर पहुंच सके, और खुद को तैनात कर लिया ताकि वे तुरंत उसकी प्रतिक्रिया का जवाब दे सकें। जरूरत है। बहुत देर हो चुकी थी और वे थके हुए थे, लेकिन उनमें से कोई भी सो नहीं पाया या अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं हुआ। आख़िरकार, गुरु ने दस्तक दी! उसकी देखभाल करने के लिए उत्सुक होकर, उन्होंने तुरंत दरवाज़ा खोला और उसका अंदर स्वागत किया। और उसकी वापसी के लिए तैयार रहने के लिए उसने उनका सम्मान किया।

वे सेवक कितना धन्य महसूस करेंगे! उनके गुरु ने उनके साथ प्रेम और करुणा का व्यवहार किया था, जिससे बदले में वे भी उससे प्रेम करने लगे। यह दृष्टान्त महान गुरु, येशुआ मसीहा के सेवकों के रूप में हमारे जीवन को दर्शाता है। उसने हममें से प्रत्येक को उस महान दिन की तैयारी के लिए उसकी सेवा करने के लिए बुलाया है जब हम बादलों में प्रभु से मिलने के लिए एक साथ उठाये जायेंगे (प्रथम थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)।

सेवक के रूप में, क्या हम अपने गुरु की अनुपस्थिति में खुद को व्यस्त रखेंगे, या हम सतर्क रहेंगे, उनकी आज्ञा मानने के लिए तैयार रहेंगे? यीशु उन लोगों को पुरस्कृत करने के लिए उत्सुक हैं जिन्होंने उनकी अनुपस्थिति में काम किया है और जब वह वापस लौटते हैं तो जागते हैं और तैयार रहते हैं (प्रकाशितवाक्य Cc की मेरी टिप्पणी देखें – क्योंकि हम सभी को मसीह के न्याय आसन के सामने उपस्थित होना चाहिए)। हमारी मुक्ति की ढाल एक प्रेमपूर्ण मुक्तिदाता और रक्षक है, किसी भी सांसारिक गुरु के विपरीत जिसे हम कभी नहीं जानते होंगे। राजा होते हुए भी येशुआ ने सेवा का सर्वोच्च कार्य किया: उसने क्रूस पर अपना जीवन दे दिया ताकि हम उसके साथ हमेशा के लिए एकजुट हो सकें।

He – चौकस सेवकों का दृष्टान्त लूका १२:३५-४८ | 5

हमारे गुरु की वापसी उन लोगों के लिए एक गौरवशाली दिन होगी जो उस पर विश्वास करते हैं और उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जानते हैं। उस दिन, वह हमारे विश्वास और अपनी ओर से किसी भी अच्छे कार्य को स्वीकार करेगा। वह अपने वफ़ादार सेवकों को गले लगाते हुए कहेगा, “आओ, अपने मन को तरोताज़ा करो, मेरी शादी की दावत में भाग लो, और मेरी ख़ुशी में शामिल होओ। बैठ जाओ और मैं तुम्हारे पैरों से सांसारिक परीक्षाओं, कष्टों और कष्टों की गंदगी को धो दूंगा, तुम्हारा महंगे तेल से अभिषेक करूंगा, और तुम्हें धार्मिकता के अपने शुद्ध सफेद वस्त्र पहनाऊंगा।

प्रभु, मुझे ईमानदारी से आपकी सेवा करने में मदद करें ताकि उस अंतिम दिन, मुझे सभी पुरस्कारों में से सबसे बड़ा पुरस्कार मिल सके। . . आपकी उपस्थिति में आनंद की परिपूर्णता।